



ध्येय IAS®

most trusted since 2003

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारतीय इतिहास (मौर्य काल)

द्वारा
विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) : A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR : 25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR : 1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY : 28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ : IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE : A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE: CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR : OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad 9879113469/8000162499
 Aligarh 9837877879
 Azamgarh 7617077051
 Bahraich 7275758422
 Bareilly 9917500098
 Chandhigarh 8146199399/9050888338
 Faridabad 9711394350
 Gorakhpur 7080847474
 Gwalior 9893481642
 Haldwani 8077728957/7060172525
 Hisar 9996887708
 Jabalpur 8982082023

Jodhpur 9529989199/9928965998
 Jalandhar 9888777887
 Kanpur 7275613962
 Kurukshetra 8950728524
 Lucknow Alambagh 7518373333
 Ludhiana 9876218943/9888178344
 Moradabad 9927622221
 Patiala 9041030070
 Patna 9334100961
 Rewa 9926207755
 Varanasi 7408098888



“मौर्य शासक”

योगदान, कार्य, नीतियाँ

- • चन्द्रगुप्त मौर्य (323 BC - 297 BC)
- • बिन्दुसार (297 - 273 BC)
- • अशोक (269 - 232 BC)
- • अशोक के उत्तराधिकारी (232 BC - 185 BC)

भूमिका

काफी कमजोर हुए अशोक के निर्वल होने
साम्राज्य का बहारा कर लिया अन्तिम
मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके
सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी।

मौर्य साम्राज्य का
पतन कारण

→ इसी के साथ 185 BC में साम्राज्य का
पतन हो गया।

“चन्द्रगुप्त मौर्य”

यह एक महान विजेता एवं राज्य का संस्थापक था उसने
6 लाख की सेना द्वारा अनेक क्षेत्रों की विजय करते हुए
काबुल केन्दार से कर्नाटक एवं बंगाल की खाड़ी तक एक
विशाल साम्राज्य स्थापित किया वह मगध का पहला शासक
था जो सिन्धु के पार के क्षेत्रों पर सीधा नियंत्रण किया इस
कम में 305 BC में सेल्युकस निकेटर के साथ उसका
युद्ध हुआ जिसमें उसने काबुल कांधार हेरात कव्चातान
आदि क्षेत्र प्राप्त कीसे किये।

चन्द्रगुप्त मौर्य कुशल संगठनकर्ता एवं योग्य प्रशासक
था राज्य के संचालन के लिए उसने एक मजबूत एवं पिरा-
मिडाकार राजनीतिक एवं प्रशासनिक ढांचा बनाया प्रशासन
का विभिन्न भागों में बहारा किया केन्द्र में मंत्रियों एवं
अध्यक्षों के माध्यम से वह खुद शासन का वागडोर संभालता
था साम्राज्य को चार प्रांतों में बाँटकर उसमें गवर्नरों
की नियुक्ति किया प्रांतों को भागों निलों में बाँट गया
उसने सैन्य व्यवस्था गुप्तचर प्रणाली न्याय व्यवस्था को
बेहतर बनाया।

चन्द्रगुप्त मौर्य सहिष्णु उदार एवं धर्म निरपेक्ष शासक था सभी मतों धर्मों एवं विचारों को उसने समान स्थान प्रदान किया उसके गुरु ब्राह्मण थे लेकिन उसने जैन धर्म को स्वीकार किया सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाया

वह एक प्रजाहितैसी एवं कल्याणकारी शासक था मैगस्थनीज लिखता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य जनता के समस्याओं के प्रति हमेशा सचेत रहता था वह वैश्व बदलकर भ्रमण करता है अधिकारियों के कार्यों की समीक्षा करता है अकाल आग से बचाव महामारी आदि की स्थिति में उसने अनेक राहत कार्य किये।

“ विदुसार ”

(297 - 273 BC)

अपने आन्तिम दिनों में चन्द्रगुप्त मौर्य ने पुत्र विदुसार को अपना सम्पूर्ण राज्य सौंप दिया तथा दक्षिण भारत में मैसूर श्ववर्णवेलंगाला (मैसूर) चला गया इस प्रकार विदुसार को अपने पिता से एक विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ।

विदुसार के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण बातें निम्न हैं

विदुसार ने अपने पिता द्वारा प्राप्त साम्राज्य को मजबूती से संभालने का कार्य किया उसने वेद्वर प्रशासन देने की कोशिश की इसके दरबार में कुछ समय तक चाणक्य के होने की सूचना मिलती है इसकी मंत्रीपरिषद् काफी बड़ी थी राजकारण का कार्य वह मंत्रियों की सलाह से करता था

विदुसार के समय तक्षशिला में दो विद्रोह हुए जिसे दबाने के लिए उसने अपने दो पुत्रों सुशीम एवं अशोक को भेजा था इन्हें सफलता पूर्वक दबा दिया गया।

अपने पिता की भांति विदुसार ने भी विदेशों से वेद्वर राजनयिक संबंध स्थापित किए मिस्र के शासक रासमै फिलाईल्फ प्रथम से उसके अच्छे संबंध थे सीरिया के शासक एन्टीओकस से भी उसके मधुर संबंध थे एन्टीओकस ने अयमेकस नामक एक राजदूत को विदुसार के दरबार में

भैजा था बिदुसार से सीरिया के शासक से तीन वस्तुओं सुष्मी मंजीर, भीष्मी मदीरा तथा सोफिस्ट (दार्शनिक) की मांग की थी जिसमें प्रथम दो भेजवा दिया लेकिन कानूनी अड़चनों के कारण दार्शनिक नहीं भेजा गया।

बिदुसार एक साहिष्णु शासक था वह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था उसके दरबार में आजीवकों को काफी महत्व प्राप्त था सभी धर्मों के प्रति बिदुसार उदार दृष्टिकोण रखता था

“ अशोक महान ”

(269 - 232 BC)

बिदुसार के मृत्यु के बाद 4 वर्षों तक सिंहासन खाली रहा

(273 - 269 BC)

प्रारम्भिक जीवन
(कलिंग से पूर्व)
(269 - 261 BC)

कलिंग युद्ध
घटना कारण परिणाम

प्रारम्भिक जीवन :- अपने पिता बिदुसार के समय अशोक उज्जैनी का गवर्नर था तथाशिला में विद्रोह का दमन किया था राजतरंगिणी के अनुसार अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में शिव का उपासक था

बौद्ध परम्परा अशोक को उसके प्रारम्भिक जीवन में आताताई (डुमरो को सताने वाला) अनेतिक व्याक्री के रूप में चित्रित करती है बौद्ध परम्परा के अनुसार उसने अपने 99 भाइयों की हत्या करके गदरी प्राप्त की थी। बौद्ध साहित्य की सूचनाओं को अतिशयोक्तिपूर्ण माना जाता है लेकिन यह अवश्य है कि चार वर्षों तक चले उत्तराधिकार के संघर्ष के बाद उसने राजगद्दी प्राप्त की थी।

“ कलिंग युद्ध ”

अपने राज्याभिषेक के आठवें (261) वर्ष अशोक ने कलिंग के साथ भीषण युद्ध किया जिसकी जानकारी अशोक के 13 वें बृहद शिलालेख से मिलती है इस युद्ध में एक लाख लोग मारे गए लगभग इतने ही निर्वाधित कर दिये गए एवं देड़ लाख लोगों को बन्दी बना लिया गया।

“ कारण ”

इतिहास में कलिंग युद्ध के पीछे अनेक कारण उत्तरदायी माने जाते हैं।

आर्थिक कारण :- कलिंग आर्थिक संसाधनों से काफी सम्पन्न प्रदेश था यहाँ ब जोड़े की अनेक खाने थी वन संसाधन एवं हाथी में भी कलिंग समृद्ध था कलिंग में अनेक प्राकृतिक कदरगाह थे कलिंग दक्षिण के साथ होने वाले व्यापार के बीच मार्ग पर पड़ता था कलिंग पर नियंत्रण से मगध को अधिक आर्थिक लाभ हो सकता था अतः आर्थिक कारण युद्ध के पीछे महत्वपूर्ण कारक थे।

सामरिक कारण :- कलिंग मगध के बिल्कुल पड़ोस में था कलिंग के साथ मगध को हमेशा चुनौति देते रहते थे यही कारण है कि अशोक के पूर्व भी मगध के शासक महापदमनन्द ने कलिंग की विजय की थी अशोक के बाद खारवेल ने पुनः मगध को चुनौती दी थी मगध के लिए पड़ोस में एक मजबूत राज्य का होना सामरिक तथा रक्षा की दृष्टि से एक बड़ी संकट समस्या थी फलतः अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया था।

साम्राज्यवादी नीति :- अशोक एक साम्राज्यवादी शासक था विम्बीसार से लेकर अशोक तक मगध में एक से बढ़कर एक साम्राज्यवादी शासक आते गए पड़ोस के राज्यों पर नियंत्रण एवं विस्तार करना मगध की पुरानी नीति थी अशोक ने भी इसी नीति का पालन करते हुए कलिंग युद्ध किया -

“कलिंग युद्ध का परिणाम”

- इस युद्ध में लाखों लोग मारे गए युद्ध के कारण लाखों परिवार उलड़ गए मानव संसाधन की समाप्ती हुई।
- युद्ध के कारण काफी संपत्ति नष्ट हुई कलिंग को काफी आर्थिक & क्षति उठानी पड़ी।
- कलिंग के बाद मगध के शासको द्वारा तत्काल के माध्यम से विस्तार की नीति पर रोक लग गयी जिसका प्रारम्भ बिम्बीसार ने किया था
- कलिंग युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव अशोक पर पड़ा युद्ध विध्वंसिता को देखकर वह दुःखित हो उठा युद्ध ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया युद्ध के बाद अशोक ने तत्काल द्वारा सामान्य विस्तार की नीति को सदा के लिए त्याग दिया तथा अहिंसा एवं धम्म शान्ति का मार्ग अपना लिया।

“अशोक का अभिलेख”



सामान्य परिचय- अशोक ने अपने साम्राज्य के भीतर अफगानिस्तान से कर्नाटक एवं बंगाल की खाड़ी तक अनेक अभिलेख जारी किये जिसमें अशोक की (आन्तरिक बाह्य) समान एवं समिति की संस्कृति की विविध पक्षों की जानकारी प्राप्त होती है।

अभिलेख के महत्व (कुल पाँच भागों में बाँटकर)

- मौर्य साम्राज्य के सीमा का निश्चरण करने में अशोक के लेख काफी प्रामाणिक स्रोत हैं।
- अशोक की नीतियों, धम्म नीति, आन्तरिक एवं विदेश नीति को जानने के लिए अभिलेख काफी मूल्यवान स्रोत हैं।
- तत्कालिक समाज एवं प्रशासन के बारे में भी अभिलेखों से महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है।
- भाषा (प्राकृत, पुनाबी, भरमाइक) तथा लिपी (ब्रह्मी, भारमाइक पुनाबी खरोष्ठी) कला (विशेषतः शूर्तिकला) एवं संस्कृति के विविध पक्षों पर इससे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

“अशोक का धम्म (धर्म)”

धम्म से आशय धम्म के मूलतत्व धम्म नीति लागू करने के कारण स्वरूप प्रभाव वर्तमान में प्रासंगिकता

धम्म से आशय :- अशोक ने अपने अभिलेखों के माध्यम से अनेक नियमों के पालन का आह्वान किया है जिसे वह धम्म कहता है इसमें हिंसा नहीं करने माता-पिता की सेवा करने गुरुओं एवं ब्राह्मणों का सम्मान करने दासों एवं नौकरों से अच्छा व्यवहार करने की वकालत की गई है।

अशोक के धम्म के दो पक्ष हैं।

विधायक पक्ष (सकारात्मक) - इसके तहत माता पिता की सेवा करना सही सहिष्णुता का पालन करने दासों नौकरों से अच्छा व्यवहार करने गुरुओं एवं ब्राह्मणों का सम्मान करने आदि को अशोक ने पालन करने का जगत से आह्वान किया है।

निषेधात्मक पक्ष - इसके तहत अशोक ने जगत से अनेक कार्य नहीं करने की वकालत की है जिसमें हिंसा नहीं करना, किसी के धर्म में हस्तक्षेप नहीं करना फिजूलखर्ची नहीं करना सम्पत्ति संग्रहण नहीं करना आदि बातें शामिल हैं।

“अशोक के धम्म के मूल तत्व”

लगभग 50 से अधिक अशोक के अभिलेखों का सर्वेक्षण करने के बाद कहा जा सकता है कि अशोक के धम्म के मूल तत्व निम्न हैं।

- अहिंसा का पालन करना -
- सामाजिक नैतिकता का पालन करना (माता-पिता की सेवा गुरुओं एवं ब्राह्मणों का सम्मान दासों को एवं नौकरों से अच्छा व्यवहार करना)
- सर्वधर्मसंभाव एवं सहिष्णुता को बढ़ावा देना (एक दुसरे के प्रति शिष्टाचार एवं शालिनता अपनाना)
- धार्मिक कर्मकाण्डों की जगह सरलता पर ध्यान देना
- सम्पत्ति संग्रहण न करना व फिजूलखर्ची न करना

“अशोक द्वारा धम्म नीति लाए जाने के कारण”

धम्म नीति लाए जाने के पीछे अनेक कारक उत्तरदायी थे जैसे राजनीतिक कारण -: अनेक विद्वानों का तर्क है कि धम्म नीति लाए जाने का प्रमुख कारण राजनीति था अशोक एक शासक था किसी भी शासक के लिए राजकाज चलावने के लिए विचारधारा की जरूरत होती है एक ऐसे नीति की आवश्यकता पड़ती है जिससे शान्ति एवं अस्थायित्व कायम किया जा सके अशोक ने धम्म नीति द्वारा अपने शासन को सुदृढ़ बनाने का काम किया अतः इसे लाए जाने के पीछे राजनीति एक प्रमुख कारण थी।

धार्मिक कारण -: अशोक के समय अनेक धर्म एवं सम्प्रदाय थे जिसमें बौद्ध जैन आजीवक आदि प्रमुख थे विभिन्न पंथों एवं सम्प्रदायों के होने से धार्मिक तनाव एवं संघर्षों के होने की संभावना थी यही कारण है कि वह धर्म महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ती करता है इस प्रकार वह धम्म नीति के माध्यम से धार्मिक समन्वय करना चाहता था।

सामाजिक कारण -: अशोक के समय समाज विभिन्न वर्गों तथा जातियों में बंटा था किसी भी ऐसे समाज में जहाँ अधिकारों को लेकर विभाजन हो उसमें हमेशा तनाव बना रहता था इन तनावों से सामाजिक संघर्ष हो सकते थे। ऐसे में किसी ऐसे नीति की आवश्यकता थी जो समाज को जोड़ सके एवं तनावों को कम कर सके अतः अतः धम्म नीति लाए जाने का एक प्रमुख कारण सामाजिक था।

आर्थिक कारण -: विद्वानों का एक वर्ग मानता है कि अशोक के शासन काल में समस्त सम्राज्य में सर्वत्र एक जैसा विकास नहीं था एक तरफ भगवत् जैसे आर्थिक रूप से विकसित क्षेत्र थे तो दूसरी तरफ भारतवर्ष के पिछड़े इलाके थे इस आर्थिक विषमता से होने वाले संघर्षों को रोकने के लिए किसी नीति की आवश्यकता थी जिसके लिए अशोक ने धम्म नीति को सारा लिया।

“अशोक के पूर्वजों / दरबार के उदार नीतियों का प्रभाव”

मौर्यों का दरबारी वातावरण काफी उदार था जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य जैन तथा बिन्दुसार आजीवक था बौद्ध धर्म अपनाने से पूर्व अशोक ब्रम्हण धर्म का अनुयायी था अतः इस उदार वातावरण तथा रुढ़ीवादिता से रहित सोच का प्रभाव अशोक पर भी पड़ा जिसके कारण वह प्रगतिशील रूप से धम्म जैसे नीति के तारे में सोच पाया।

“अशोक के धम्म का स्वरूप”

- 1) मानवतावादी एवं लोक कल्याणकारी
- 2) सामाजिक आचार संहिता एवं नियम
- 3) कर्मकाण्डों की बजाय धार्मिक सरलता पर बल
- 4) धम्म का स्वरूप राजनीतिक भी था क्योंकि इसके द्वारा वह शासन में स्थिरता लाना चाहता था -
- 5) अशोक का धम्म एक प्रगतिशील संकल्पना थी जो काफी अनोखा था

अशोक के धम्म पर अन्य धर्मों / विचारों के प्रभाव का मुद्दा

अशोक का धम्म	प्रभाव
• अहिंसा का पालन	बौद्ध धर्म से प्रभावित (D.R भण्डारकर)
• माता-पिता की सेवा	उपनिषदों का प्रभाव
• ब्राह्मणों / अमणों का सम्मान	राजनीति से प्रेरित एवं राजधर्म
• दासों नौकरों से अच्छा व्यवहार	सभी धर्मों का सार (राधाकुमुदशुक्ला)
• कर्मकाण्ड की बजाय सरलता अपनाना	

अशोक का धम्म उसकी स्वतंत्र नीजी संकल्पना थी या इस पर अन्य धर्मों (बौद्ध ब्रम्हण आदि) का प्रभाव था इसे लेकर विद्वानों के बीच एक लम्बा बहस रहा है जिसपर धिन - 2 मत दिए गए हैं जैसे -

अशोक का धम्म / बौद्ध धर्म :- D.R भण्डारकर जैसे विद्वान अशोक के धर्म को बौद्ध धर्म से प्रभावित मानते हैं यहाँ तक की कुछ विद्वान इसे बौद्ध धर्म की शाखा घोषित करते हैं भण्डारकर का कया है कि बौद्ध साहित्य सिंगलौवादसूत में माता-पिता की सेवा प्राणियों के प्रति दयाभाव दिखाने

हिंसा नहीं करने आदि का निर्देश दिया गया है ऐसा ही अशोक के धम्म में भी है वह खुद बौद्ध था अतः उसने बौद्ध से प्रभावित होकर अपनी धम्म नीति को लागू किया था।

अनेक विद्वानों ने घण्टारकर के मत का खण्डन किया है इनका तर्क है कि अशोक का धर्म बौद्ध धर्म से प्रभावित नहीं था अशोक ने कहीं भी बुद्ध तथा बौद्ध संघ की चर्चा नहीं की है निर्वाण प्राप्ति अष्टांगिक मार्ग बुद्ध की भगवद्गता भिक्षु एवं भिक्षुणी आदि की कहीं भी चर्चा नहीं की है अतः उसके धर्म को बौद्ध धर्म से जोड़ना सही नहीं है।

विभिन्न मतों का परीक्षण करने एवं अशोक के धम्म के मूल तत्वों की जाँच करने के बाद कहाँ जासकता है कि अशोक का धम्म वैसा नहीं है जैसा की बौद्ध धर्म में लेकिन यह आवश्यक है कि उसके धम्म पर बौद्ध धर्म के कुछ तत्वों का प्रभाव रहा हो पूर्व की परम्परा का प्रभाव बाद की विचारधारा पर पड़ना स्वभाविक बात है अशोक के धम्म को किसी धर्म से जोड़कर देखना युक्ती संगत नहीं है। उसका धम्म एक नैतिक आचार संहिता था जिसका स्वरूप मौलिक था।

“अशोक का धम्म बनाम ब्रम्हण / उपनिषदों का प्रभाव

विद्वानों का एक वर्ग मानता है कि अशोक का धम्म वैदिक उपनिषदीय सिद्धान्तों एवं विचारों से प्रभावित था ध्यान से देखने पर इसकी जड़े वैदिक साहित्य में मिलती हैं जैसे-

अशोक ने अपने धम्म नीति में सदाचार सामाजिक व्यवहार के पालन आदि पर विशेष बल दिया है ऐसे विचार सर्वप्रथम उपनिषदों में प्राप्त होते हैं उपनिषदों में मोक्ष प्राप्ति के लिए 5 गुणों को आवश्यक माना गया है। जिसमें अहिंसा, तप, दान इमानदारी सत्यवचन आदि मुख्य हैं अतः ऐसा लगता है कि उसने उपनिषदों से यह विचार ग्रहण किया

अशोक ने कर्मकाण्ड की अवधारणा को अच्छा कर्म करने कर्मकाण्डों की वजाय सरल धार्मिक व्यवहार अपनाने आदि पर विशेष बल दिया है यह सभी विचार उपनिषद साहित्य में मिलते हैं।

उपनिषदों में मोक्ष के लिए मन्त्रों के करने की बजाय की गयी है तथा कर्मकाण्डों की बजाय की गयी है अशोक भी अपने धर्म में ऐसी भाषा का प्रयोग करते हुए दिखाई देता है।

अशोक ने धम्म नीति को राजनीतिक उद्देश्य से लाया था क्योंकि धम्म नीति के तहत वह जनता के सभी वर्ग का विश्वास जीतने की कोशिश किया उसके समय अनेक धर्म जातियाँ सम्प्रदाय एवं वर्ण थे ऐसे समाज में शान्ति तभी स्थापित हो सकती है राजकाज तभी ठीक से चल सकता है जब जनता के सभी वर्गों से जुड़ाव कायम किया जाए, शान्ति की स्थापना हो सर्ववैभवं एवं एतरेय उपनिषद में राजधर्म की व्याख्या करते हुए बताया गया है कि शासक को सभी धर्मों एवं विचारों को बढ़ावा देना चाहिए तभी सुख एवं शान्ति प्राप्त की जा सकती है यहाँ भी अशोक उपनिषदों से उभावित होता हुआ दिखाई देता है।

“अन्य विचार”

शुद्धाशुमुद, मुष्णजी का मानना है कि अशोक के धम्म के तत्व किसी एक धर्म से संबन्धित नहीं है इस प्रकार की बातें लगभग सभी धर्मों की विशेषता है अतः इसका धर्म सभी धर्मों का सार है।

प्लूटि ने अशोक के धम्म को राजधर्म की संज्ञा दी है उनका कहना है कि उसके धर्म का पालन उसके साम्राज्य की समस्त जनता करती थी यही कारण है कि उसने अपने धम्म नीति के माध्यम से काफी लम्बे समय तक शासन किया अतः उसे राजधर्म कहा जाना चाहिए।

शेमिला थापर का तर्क है कि अशोक का धम्म किसी धर्म विशेष से संबन्धित नहीं था बल्कि उसके द्वारा सोची समझी गयी एक स्वतंत्र संकल्पना थी यह उसकी निजी देन थी जिसका स्वरूप प्रगतिशील एवं मानवतावादी था। इसके माध्यम से वह अपने राज्य में शान्ति एवं स्थिरता

“समीक्षा एवं निष्कर्ष”

विभिन्न मतों का परीक्षण करने एवं अशोक के धम्म के तत्वों की संज्ञा जांच करने के बाद कहा जा सकता है कि उसका धर्म ब्रह्मण वैदिक जैन या किसी अन्य धर्म की भाँति कोई नया धर्म नहीं था। भारतीय परम्परा में धर्म की सदाचार का पालन करने नैतिक कर्तव्य काने के सन्दर्भ में जो व्याख्या है उस रूप में इसे धर्म कहा जा सकता है वस्तुतः इसे सामाजिक आचार संहिता कहा जाना चाहिए जिसकी लड़े उपनिषदों एवं वैदिक साहित्य दोनों में मिलती है।

अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रसार प्रचार विकास के लिए

→ किये जाने वाले कार्य ←

कलिंग युद्ध के 2½ वर्षों बाद अशोक ने विजी तोर पर बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया आगे आजीवन वह बौद्ध बना रहा तथा बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए उसने कई महत्वपूर्ण कार्य किये जैसे -

अशोक ने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया उसके संरक्षण में तीसरी बौद्ध संगति का पाटलीपुत्र में आयोजन हुआ उसने बौद्ध धर्म में भेद (घुट) को रोकने का कार्य किया।

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अनेक मिशन भेजे तृतीय बौद्ध समिति के बाद उसने देश के भीतर हिमालय क्षेत्र मध्य देश पश्चिमी भारत आदि में अनेक धर्म प्रचारकों को भेजा गया भारत के बाहर विदेशों में भी उसने प्रचार मिशन भेजा श्रीलंका में पुत्र गहेद तथा पुत्री संघमित्रा तथा म्यांमार में सोन एवं उत्तरा को भी भेजा गया

अशोक ने धर्म प्रचार के लिए अनेक पवित्र बौद्ध स्थलों जैसे लुम्बिनी बौद्ध गया सारनाथ आदि की यात्रा किया उसने कला के माध्यम से भी बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार को बढ़ावा दिया बौद्ध परम्परा के अनुसार उसने 8400 स्तूपों का निर्माण कराया था।

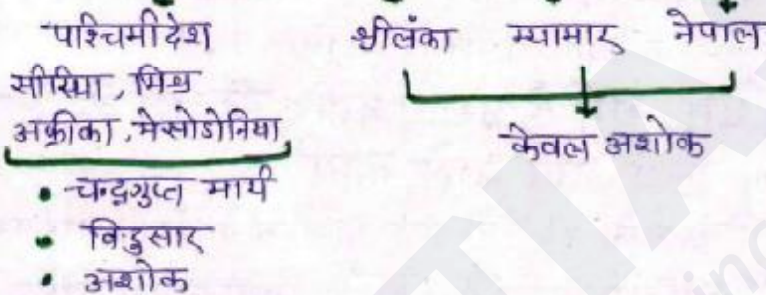


उमने अनेक स्तम्भ स्थापित कराए उन स्तम्भों पर बौद्ध प्रतीकों से सजावित नानबरो जैसे शेर वृषभ हाथी घोड़ा चक्र आदि को स्थान दिया -

“मौर्यों की विदेश नीति एवं वैदेशिक संबंध”

युद्ध (शक्ति) एवं कुटनीति के संतुलन पर आधारित

इसी आधार पर मौर्यों ने अनेक देशों से संबंध स्थापित किये।



चन्द्रगुप्त मौर्य से लेकर अशोक महान तक मौर्य शासकों ने अनेक देशों से (राजनयिक) संबंध स्थापित किये कौटिल्य के अर्थशास्त्र यूनानी स्त्रोत एवं अशोक के अभिलेखों से मौर्यों के विदेश नीति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

मौर्यों ने युद्ध एवं शक्ति का प्रदर्शन शान्ति व्यापार एवं राजनय (Diplomacy) सभी तौर तरीकों का प्रयोग अपने विदेश नीति में किया।

“युद्ध एवं शक्ति तथा विदेश नीति”

चन्द्रगुप्त मौर्य बिंदुसार तथा अशोक जैसे सभी महान मौर्य शासकों ने विदेश नीति के निर्धारण में शक्ति को आधार बनाया। शान्ति एवं युद्ध के द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य ने व्यास के पश्चिम में सिकन्दर द्वारा विजित होने पर अधीनता स्थापित किया सैन्धुकांत को 305 BC में युद्ध में पराजित करते हुए उमने काबूल कांधार हेरात बलुचिस्तान भादि क्षेत्र प्राप्त किये।

बिंदुसार ने शक्ति के द्वारा विद्रोहों को कुचलने का कार्य किसी इसी प्रकार अशोक ने भी युद्ध एवं शान्ति की नीति का पालन करते हुए कलिंग विजय किया तथा मगध की सीमा को बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत बना दिया।

“शान्ती व्यापार कुरनीति एवं मैत्रीपूर्ण संबंध”

लगभग सभी मौर्य शासकों ने विदेशों से सव्य निश्चरित में मित्रता शान्ती एवं कुरनीति को महत्वपूर्ण स्थान दिया। चंद्रगुप्त मौर्य ने सैल्युकस पर विजय प्राप्त करने के बाद भी उससे मित्रतापूर्ण व्यवहार किया वैवाहिक संबंध स्थापित किये साथ ही कुरनीतिक संबंध बनाए रखने का परिणाम था कि मेगस्थनीज मौर्य दरबार (पाटलीपुत्र) आया था।

बिंदुसार ने भी अपने पिता की भाँति मित्रता व कुरनीति के आधार पर संबंध बनाए तथा दूतों का आदान प्रदान किया। उसके मित्र एवं सीरिया के शासक के साथ अच्छे संबंध थे। सीरिया के शासक एंटीओकस-I ने बिंदुसार के दरबार में डायमैकस नामक राजदूत भेजा था।

कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने भी शान्ती अहिंसा एवं धर्म मित्रता को विदेशनीति का आधार बनाया तथा पश्चिमी देशों (मिथ्र सीरिया यूनान) श्रीलंका बर्मा नेपाल आदि के साथ संबंध स्थापित किए।

“मौर्य शासक एवं विदेशों के साथ संबंध”

मौर्यों ने विदेशों के साथ वैदेशिक संबंध बनाये जैसे-
चंद्रगुप्त मौर्य :- सीरिया के शासक सैल्युकस निकैटर से इसके अच्छे संबंध थे 305 BC में चंद्रगुप्त ने सैल्युकस को पराजित किया था लेकिन उसके बाद दोनों में मित्रता संबंध स्थापित हुआ सैल्युकस की पुत्री के साथ चंद्रगुप्त मौर्य शासक से हुआ अने अपने राजदूत मेगस्थनीज को भेजा था।

बिंदुसार :- मिथ्र के साथ टालमी फिलाडेल्फ प्रथम तथा सीरिया के शासक एंटीओकस प्रथम से बिंदुसार के अच्छे संबंध थे बिंदुसार ने सीरिया के शासक से ग्रीष्मि मद्रिरा सुखी अंजीर तथा (सोफिस्ट) दार्शनिक की मांग की थी बिंदुसार के दरबार में डायमैकस नामक एक राजदूत को सीरिया के

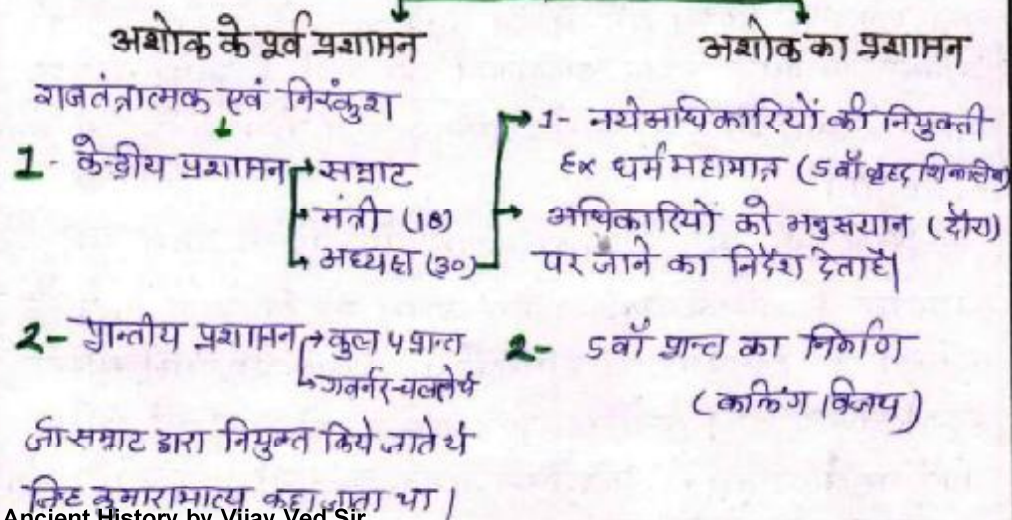
अशोक - अशोक ने अनेक देशों से विदेशी संबंध बनाए जैसे
पश्चिमी देश - अशोक के 13वें बृहद् शिलालेख से सूचना मिलती है पश्चिम के अनेक देशों से उसके अनेक संबंध थे।
मिश्र के शासक टालमी फिलाडेल्फ ड्वितीय, सीरिया के शासक एरियोक्तस द्वितीय, यूनान के शासक एन्टीगोनस गोनरास, मेसोपोटामिया के शासक एलेक्जेंडर तथा सीरिन (अफ्रीका) के शासक मगस के से अशोक के राजनयिक संबंध थे।

श्रीलंका - अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा था समकालीन श्रीलंकाई लिप्सा से उनके मित्रतापूर्ण संबंध थे।

म्यांमार (बर्मा) - म्यांमार में अशोक ने स्तूप एवं उत्तरा को बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए भेजा था।

नेपाल - अशोक ने अपनी पुत्री चारुमति का विवाह नेपाल में किया था अतः नेपाल से भी अनेक संबंध थे उसने नेपाल में कई स्तूप भी बनवाये थे। राम्मिनदेई अभिलेख से सूचना मिलती है कि धुम्विनी वाला क्षेत्र अशोक के साम्राज्य का हिस्सा था।

अशोक का प्रशासनिक सुधार



3- जिला प्रशासन
समाहर्ता
मुक्त
रज्जुक

3- जिला स्तर पर उसने महत्वपूर्ण परिवर्तन किये रज्जुक जो पूर्व में सामान्य सर्वेक्षण अधिकारी होते थे उन्हें न्यायिक अधिकारी बना दिया प्रत्येक एक लाख की जनसंख्या पर एक रज्जुक की नियुक्ती थी विधि एवं कानून में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया उसने रज्जुकों को न्यायसमता एवं दण्डसमता (विधि का ज्ञान) के आधार पर न्याय करने का आदेश जारी किया

4- नगर प्रशासन -
नागरिक / महापौर

4- नगर प्रशासन में भी अशोक ने महत्वपूर्ण सुधार किये उसके जोगद अभिलेख तोसली एवं समाप्ता में अधिकारियों को जगता का कल्याण करने के निर्देश दिये गये हैं।

5- ग्रामीण प्रशासन
ग्रामीणी

“मौर्य साम्राज्य का पतन”

(323 BC - 185 BC) Decline पतन क्यों हुआ?

1- अशोक की भूमिका → वम्हण विरोधी नीति पतन के लिए जिम्मेदार थी (हर-प्रसाद शास्त्री)
→ शान्ति अहिंसा एवं धम्म की नीति पतन के लिए जिम्मेदार थी (हेमचन्द्र राय चौधरी)

2- राजनीतिक प्रशासनिक कारक पतन के लिए जिम्मेदार थे (शेमिल पण्डर)
↳ मौर्य प्रशासन की जाग नौकरशाही थी इसका ढाँचा पिरामिडकार



→ इसमें किंग की योग्यता बहुत महत्वपूर्ण होती है इसमें जो अधिकारी थे वे शासक के प्रति वफादार निष्ठावान थे।

3- आर्थिक संकट के कारण पतन हुआ → डी.डी. कोशाम्बी (दामोदर धर्मशाम कोशाम्बी)

4- मगध की भौतिक संस्कृति का सुदूरवर्ती देशों में प्रसार होने के कारण पतन हुआ - (शमशरण शर्मा)

5- अशोक के बाद के निर्बल एवं अयोग्य उत्तराधिकारी का भाग सामान्यतः अधिकतर इतिहासकार इसे मानते हैं।

“मौर्य कला”

मौर्यकाल में अनेक सौन्दर्यपूर्ण तथा रोचक कला कृतियों का निर्माण किया गया जिसके तहत महल अनेक गुफाएँ स्तम्भ स्तूप एवं मूर्तियों का निर्माण किया गया हड़प्पा सभ्यता के पतन के हजारों वर्षों बाद इस प्रकार के कलाओं का विकास हुआ था बीच के काल में कलाएँ लगभग नदारद थी मौर्य काल में कलाओं का विकास शासकों तथा आम जनों दोनों द्वारा किया गया अतः इसे दो भागों में बाँटकर देखा जाता है।

मौर्य कला

राजकीय कला
(Court Art)
शासकों द्वारा निर्मित
महल, स्तूप, गुफाएँ,
स्तम्भ

लोक कलाएँ
(popular Art)
आम लोगों द्वारा निर्मित
• यक्ष-यक्षिणी प्रतिमाएँ
• धौली की सघी
• मृत्भूर्तियाँ

“राजकीय कला”

मौर्य शासकों के तहत अनेक राजकीय कला कृतियों का निर्माण किया गया जैसे -

चन्द्रगुप्त का महल (राजप्रसाद) चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा अपनी राजधानी पाटलीपुत्र में एक विशाल महल का निर्माण कराया गया था जो काफी कलात्मक था इसकी चर्चा एरियन फाहयान तथा ह्वेनसांग आदि ने की थी पटना में कुम्हार के उत्खनन से 80 पाषाण स्तम्भों का निचला हिस्सा प्राप्त हुआ है माना जाता है कि इसी स्थान पर महल बना था जो पाषाण स्तम्भ पर लकड़ी की कला के रूप में बना होगा।

स्तूप - मौर्य शासक अशोक द्वारा 84000 स्तूपों का निर्माण कराया गया वर्तमान साँची एवं भरहुत जैसे स्तूप अशोक द्वारा ही बनवाये गये थे स्तूप समाधि का प्रतिक एक वस्तु संरचना होते हैं।

गुफाएँ :- भारतीय इतिहास में मौर्य पहले शासक थे जिन्होंने पहाड़ी को काटकर गुफाओं का निर्माण कराया आज के गुफा में अशोक पहाड़ियों पर अशोक द्वारा कुल चार गुफाओं का (सुदामा विश्वज्ञोपदी कर्णचीपर, लोमछन्नेषि) निर्माण कराया गया जो कि वगल में नागार्जुनी पहाड़ियों पर अशोक के पौत्र दशरथ द्वारा कुल तीन गुफाओं (वहियका वड़यिका गोपिका) का निर्माण कराया गया ये सभी गुफाएँ साधारण ढंग से की गई पहाड़ी को सामने से काटकर भीतर कक्ष बनाए गए हैं सभी में मौर्य कालीन पालिश मिलता है एवं सभी की सभी आजीवन संन्यासियों को दान में दी गयी है।

अशोक का स्तम्भ - अशोक ने अपने धम्म नीति को जनता में पधुचाने के लिए पत्थर का उपयोग किया उनके स्तम्भ अन्य बातों के साथ साथ कला की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। ये देश के विभिन्न भागों (लौरिया अरेरान लौरिया नन्दनगढ़ रामपुरवा मेरठ दिल्ली साँची फरुखाबाद सारनाथ भादि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

“लोककला”

मौर्यकाल में आम जनो द्वारा अनेक कलाकृतियाँ बनवायी गयी जिसे लोककला के रूप में समझा जाता है जैसे यक्ष-यक्षिणी प्रतिमाएँ -

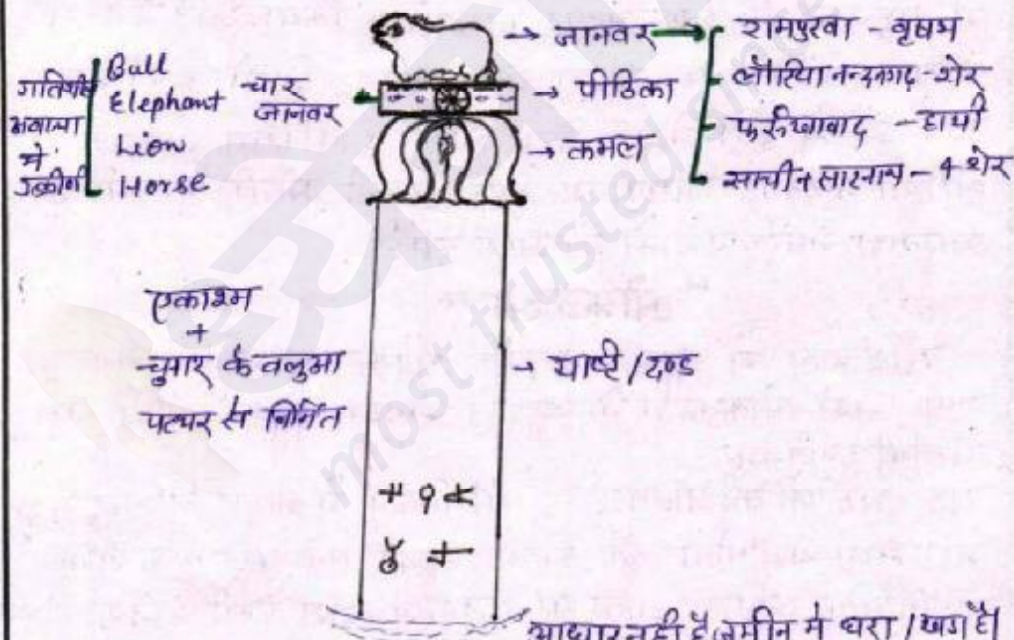
यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमाएँ :- मौर्यकाल में जनता के स्तर पर यक्ष तथा यक्षिणियों की अनेक सुन्दर एवं कलात्मक प्रतिमाओं का निर्माण कराया जाता था उत्खनन द्वारा ऐसी अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं जिसमें परधम मथुरा से प्राप्त मणिभट्ट यक्ष लोहनीपुर पटना से प्राप्त यक्षिणी दिदारगंज पटना से प्राप्त यक्षिणी की प्रतिमा मुख्य है इसमें यक्षिणी प्रतिमाएँ काफी कलात्मक हैं इन्हें सान सज्जा आभूषणों से लदा हुआ विशेष परिधान में दृष्टरा वदन के साथ भवियों में उतारा गया है।

धौली की हाथी :- ठीसी स्थित धौली की पहाड़ी पर आम लोगों द्वारा पत्थर को काटकर एक हाथी का निर्माण कराया गया यह काफी कलात्मक प्रतिमा है 4 हाथी पहाड़ी को काटकर ऐसे बनाया गया जैसे मानो वह पत्थर से बाहर निकल रहा हो।

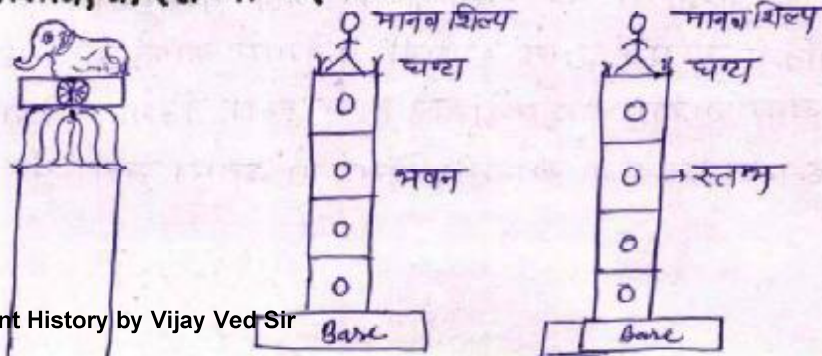
मृण्मूर्तियाँ :- मौर्यकाल में जनता द्वारा सुन्दर मिट्टी की मूर्तियों का निर्माण किया गया जिसके तहत पशुपाक्षी स्त्री एवं पुरुष प्रतिमाएँ बनायी जाती थी ये सभी तक्षशिला पटना मथुरा आदित आदि के उत्खनन से प्राप्त हुई हैं।

“ मौर्य स्तम्भ ”

कला की दृष्टि से मौर्य स्तम्भों को चार भागों में बाँटकर देखा जाता है।



भरोक के स्तम्भों पर विदेशी (ईरानी) कला के प्रभाव का मुद्रा



अनेक विद्वान मौर्य स्तम्भों को इरानी कला के प्रभाव से विकसित मानते हैं जोकि विश्वानों का एक दुसरा वर्ग मौर्य स्तम्भों को स्वदेशी कला का प्रभाव मानता है एवं विदेशी प्रभाव की स्वीकार नहीं करता है।

विदेशी प्रभाव मानने वालों के तर्क :- जो विद्वान मौर्य कला पर विदेशी कला में विश्वास स्वीकार करते हैं उनके तर्क निम्न हैं।

मौर्यों से काफी पूर्व इरान की राजधानी सुसा एवं एकपटना में ६ अनेक कला स्तम्भों का निर्माण कराया गया ये सभी स्तम्भ कालक्रम में काफी पूर्व वने भूतः विसरण द्वारा इनका मौर्य काल में प्रसार हुआ इरानी स्तम्भों के अनुकरण के आधारे पर मौर्यों में भी स्तम्भ वगवाएँ इरानी स्तम्भों के शीर्ष पर मूर्तियाँ बनायी गयी हैं उसी प्रकार मौर्य स्तम्भों के शीर्ष पर मूर्तियाँ बनी हैं।

मौर्य स्तम्भों के शीर्ष पर (पीछिका के नीचे) उल्टा कमल न घण्टा बना है जैसा इरानी स्तम्भों में है।

स्वदेशी प्रभाव मानने वालों के तर्क :-

मौर्य स्तम्भ स्वतंत्र खड़ी संरचनाएँ हैं जबकि इरानी स्तम्भों भवनों के साथ बने हैं मौर्य स्तम्भ एकाग्र हैं इनमें कहीं भी जोड़ नहीं है जबकि इरानी स्तम्भ कई टुकड़ों में जोड़कर बने हैं।

मौर्य स्तम्भों के शीर्ष पर पशुओं के शिल्प बने हैं जबकि इरानी स्तम्भों के शीर्ष पर मानव मूर्तियाँ बनी हैं।

भशोक के स्तम्भों पर जो जानवर (भोर हाथी वल खोडा) बने हैं वे सभी भारतीय परम्परा के जानवर हैं हड़प्पा काल में ही इनमें से अनेक जानवरों के शिल्प भारतीयों के द्वारा बनाए जाते थे भूतः यह शुद्ध रूप से स्वदेशी कला का उदाहरण है।

मौर्य स्तम्भ के शीर्ष पर घण्टा न होकर उल्टा कमल बनाया गया है निम्न एक - 2 पंखुडियाँ दिखाई देती हैं।

कमल भी स्वदेशी भारतीय परम्परा का प्रतीक है।
मौर्य स्तम्भों एवं इरानी स्तम्भों के तुलनात्मक जाँच के बाद
कहा जा सकता है कि मौर्य स्तम्भ स्वदेशी शिल्पियों के
कौशल एवं प्रतिभा का परिणाम है इसके कलात्मक तत्व
सीधे इरानी कला से नहीं लिए गये हैं लेकिन यह अवश्य
है कि इरानी देशों में सांस्कृतिक संकथ थे फलतः सांस्कृतिक
लौन देन के क्रम में मौर्य कला पर इरानी कला का कुछ प्रभाव
पड़ा होगा लेकिन शिल्पियों द्वारा मनुष्याभ्युन्य नकल नहीं किया
गया है इस पर स्वदेशी प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

इरानी कला बनाम मौर्य कला

↓ ↓
सूसा ← [palace (महल) palace (महल) चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र
एकवचना [pillars (स्तम्भ) pillars (अस्तंभ)

अशोक के स्तम्भों के तकनीकी एवं उद्देश्य

तकनीकी = 1- अशोक के स्तम्भ पहाड़ी को काटकर सोपे निकाले
गये हैं एकाग्रमूर्ति (monolithic)

- स्तम्भों के शीर्ष पर बूले काटकर जानवरों को स्थापित किया गया है
- सभी स्तम्भ चुनार के चितीदार बलुआ पत्थर से बने हैं।
- अशोक के स्तम्भों पर मौर्यकालीन औपपाट (चमकीला) पालिश
मिलता है

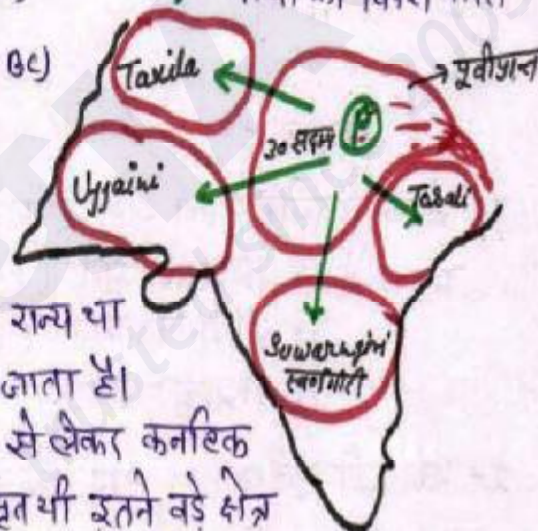
स्तम्भों के शीर्ष पर अनेक जानवर (शेर हाथी घोड़ा बैल) शिल्प
कला में बने हैं जिन्हें मानवीय श्रम द्वारा हेनी हथौड़ों से गढ़ते
हुए बनाया गया है।

उद्देश्य =

- स्तम्भों पर अशोक के राजकीय भावों एवं धम्म नीति के
तत्वों को उल्लेख किया गया है इनके निर्माण के पीछे का उद्देश्य
जनता में धम्म नीति के तत्वों का प्रसार करना था।
- जनता से सवाद कायम करना -
- राजकीय शक्ति का प्रदर्शन करना -

मौर्य राजनीति एवं प्रशासन

- | | |
|---|--|
| मौर्यशासक एवं उनकी नीतियाँ ↓ | राजनीति एवं प्रशासन ↓ |
| <ul style="list-style-type: none"> • चन्द्रगुप्त मौर्य (323 - 297 BC) • बिन्दुसार (297 - 273 BC) • अशोक (269 - 232 BC) | <ul style="list-style-type: none"> • प्रशासन की विशेषताएँ • मौर्य राज्य का स्वरूप • मौर्यों की विदेश नीति |



मौर्य राज्य एक अतिविशाल राज्य था जिसे साम्राज्य का दर्जा दिया जाता है। इसकी सीमाएँ अफगानिस्तान से लेकर कर्नाटक एवं बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत थीं इतने बड़े क्षेत्र का प्रशासन एक भारी भरकम नौकरशाही बराचलाया जाता था जिसका स्वरूप पिरामिडकार था मौर्य प्रशासन मूलतः केंद्रीकृत प्रशासन था हालांकि इसमें कुछ विकेंद्रीकृत विशेषताएँ भी शामिल थीं।

“प्रशासनिक विशेषताएँ”

मौर्य प्रशासन केन्द्र से लेकर ग्राम के बीच अनेक स्तरों पर बाँटकर चलाया जाता था जैसे -

- 1- केन्द्रीय प्रशासन →
 - सैन्य प्रशासन
 - गुप्तचर प्रशासन
 - राजस्व प्रशासन
 - न्याय प्रशासन
- मौर्य सम्राट (सर्वोच्च प्रशासक)
(निरंकुश शक्तियों से युक्त)
मंत्री / तीर्थ (18/20)
(प्रधानमंत्री, कोषाध्यक्ष, सेनापति)
अध्यक्ष (30 कुलसभ्य)
उच्चाधिकारी
• अकराध्यक्ष (खानों का अध्यक्ष)
• सीताध्यक्ष
• लोहाध्यक्ष
• पोलवाध्यक्ष (भापतोल अधिकारी)
• गुल्काध्यक्ष

कंटकशोधन (फौजदारी न्याय)
धर्मस्थानीय (दिवानी न्याय)

2- प्रान्तीय प्रशासन - साम्राज्य का वरतारा कुल पाँच प्रान्तों में किया गया था प्रशासन गवर्नर द्वारा होता था किंतु नियुक्ती सम्राट द्वारा किया जाता था

3- मण्डल / कमिशनरी - अनेक जिलों के रूप में (मुख्य अधिकारी प्रदेश)

4- जिला प्रशासन
 { समर्थता (कर संग्राहक)
 { रज्जुक (न्यायिक अधिकारी)
 { मुक्त (पुलिस अधिकारी)

5- नगर प्रशासन
 { नगरक / महापौर (मुख्य अधिकारी)
 { 36 सदस्यों की समिति द्वारा नगरों का प्रशासन चलाया जाता था (675)

6- ग्रामीण प्रशासन - ग्रामीणी मुखिया (नियुक्ती गाव सही)

मौर्य राज्य का स्वरूप / प्रकृति

सामान्य परिचय
प्रकृति संबंधी विभिन्न भव
समीक्षा

मौर्य राज्य के प्रकृति / चरित्र के बारे में इतिहासकारों के भिन्न भिन्न मत हैं समय के साथ-मतों में बदलाव भी होता रहा है।

साम्राज्यवादी राज्य :- अनेक इतिहासकार मौर्य राज्य को समाजवादी राज्य कहते हैं इनका तर्क है कि अर्थशास्त्र में एक विशाल राज्य एवं चक्रवर्ती राजा की संकल्पना है विशाल नौकराही इसमें अधिक महत्व दिया गया है मौर्य शासक काफी महत्वाकांक्षी थे एवं विशाल साम्राज्य में विश्वास करते थे यही कारण है कि मौर्यों ने युद्ध एवं कुटनीति दोनों के आधार पर एक विशाल साम्राज्य की स्थापित किया अतः राज्य का चरित्र समाजवादी था।

सैनिक राज्य :- अनेक विद्वान मौर्य राज्य को एक सैनिक राज्य का दर्जा देते हैं इनका तर्क है कि मौर्य की स्थापना एवं विस्तार सेना के दम पर हुआ तथा इसका पतन भी सैन्य विद्रोह के कारण हुए सेना मौर्य प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी अतः राज्य का स्वरूप सैनिक था

पैतृक राज्य :- कुछ विद्वान मौर्य साम्राज्य को पैतृक राज्य कहते हैं उनका तर्क है कि मौर्य शासक (विशेषतः अशोक) अपनी प्रजा से पित्रवत् व्यवहार करते थे इसी आधार पर उन्होंने शासन भी चलाया जैसे अशोक कहता है कि "समस्त प्रजा मेरी सन्तान है" वह यह भी कहता है कि जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र एवं पुत्रियों से आदेश के पालन की उम्मीद करता है उसी प्रकार शासक भी करता है अतः मौर्य राज्य एक पैतृक राज्य था।

कल्याणकारी राज्य :- इतिहासकारों का एक वर्ग मौर्य को कल्याणकारी राज्य कहता है उनका तर्क है कि मौर्य शासकों ने जनता के हितों में अनेक कल्याणकारी कदम उठाए थे राज्य के द्वारा सिंचाई के साधनों (सुदर्शन झील) का विकास कराया गया भाग से वचाव एवं अकाल से राहत का कार्य राज्य करता था

मौर्य शासकों द्वारा अनेक सड़कों एवं सरायों का निर्माण कराया गया अशोक के अभिलेखों से सूचना मिलती है कि इनने मनुष्य के साथ-साथ पशुओं के चिकित्सालयों की स्थापना करायी ये सभी संकेत एक कल्याणकारी राज्य के लक्षण हैं अतः मौर्यों के राज्य को एक कल्याणकारी राज्य मानना चाहिए।

केंद्रीकृत बनाम विकेंद्रीकृत राज्य :- अनेक विद्वान मौर्य राज्य को अतिशय केंद्रीकृत मानते हैं इनका तर्क है कि मौर्य राज्य में सारी शक्तियाँ केंद्र के पास थी मौर्य सम्राट का प्रशासन के सभी भागों (समस्त प्रशासन, सेना, न्याय व्यवस्था आदि) का सीधा नियंत्रण था प्रांतीय गवर्नरों की नियुक्ति सम्राट सीधे करता था केंद्रीय प्रशासन में सम्राट के साथ साथ विभिन्न मंत्री तथा अध्यक्ष होते थे ये विभिन्न विभागों पर नियंत्रण करते थे एवं सम्राट को सहायता देते थे स्थानीय इकाइयों के पास शक्तियाँ नहीं थी अतः मौर्य राज्य को एक केंद्रीकृत राज्य मानना चाहिए।

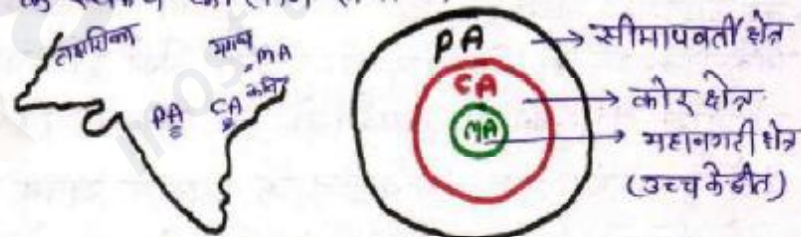
विद्वानों का एक दूसरा वर्ग मौर्य राज्य को अतिशय केंद्रीकृत नहीं मानता उनका तर्क है कि प्रशासन में विकेंद्रीकरण भी विद्यमान था गवर्नर जैसे उच्च पद पर भी स्थानीय जैसे कास्सी व्यक्तियों की नियुक्ति किया जाता था जैसे पुष्यगुप्त वैश्य चन्द्रगुप्त के समय यवन तुसाण्ड के अशोक के समय गवर्नर बनाए गए थे गावों में मुखिया की नियुक्ती स्थानीय लोगों की की जाती थी अतः राज्य में विकेंद्रीकरण मौजूद था।

मौर्य प्रशासनिक नियंत्रण के स्वरूप पर रोमिला - थापर के विचार -

मौर्य राज्य काफी विशाल क्षेत्र पर विस्तृत था जिसकी सीमाएँ अफगानिस्तान कनटिक एवं बंगाल की खाड़ी तक थी इतने बड़े राज्य पर पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण संभव था इतिहास पर बिंदु पर इतिहासकारों की भिन्न-मताएँ हैं।

विद्वानों के एक वर्ग का तर्क है कि मौर्य नौकरशाही काफी विशाल थी अर्थशास्त्र से एक विशाल एवं भारी भरकम नौकरशाही की जानकारी मिलती है। जिसकी संख्या काफी अधिक थी कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजनीतिक नियंत्रण करने के लिए अनेक दाब पैच की चर्चा करता है मौर्य राज्य अपने विभिन्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा हर स्थान पर एक समान नियंत्रण रखता था।

इतिहासकारों का एक दूसरा वर्ग समस्त साम्राज्य में मौर्यों का राजनीतिक एवं प्रशासनिक नियंत्रण एक जैसा नहीं मानता है। इस सन्दर्भ में रोमिला थापर ने मौर्य राज्य के नियंत्रण के स्वरूप को तीन रूपों में परिभाषित किया है।



महानगरीय राज्य -: इसके तहत मौर्य राज्य का नाथि क्षेत्र आता था जिसमें मगध एवं उसके आसपास के इलाके आते थे यहाँ मौर्य सम्राट मंत्री उच्च नौकरशाही एवं सेना का हमेशा संकेन्द्रण रहता था अतः यहाँ प्रशासनिक नियंत्रण सबसे अधिक था।

कोर क्षेत्र -: इसके तहत गांधार, तक्षशिला कलिंग जैसे प्रदेश आते थे आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से यह क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण होते थे राज्य का यहाँ नियंत्रण महानगरीय क्षेत्र जैसा नहीं था।

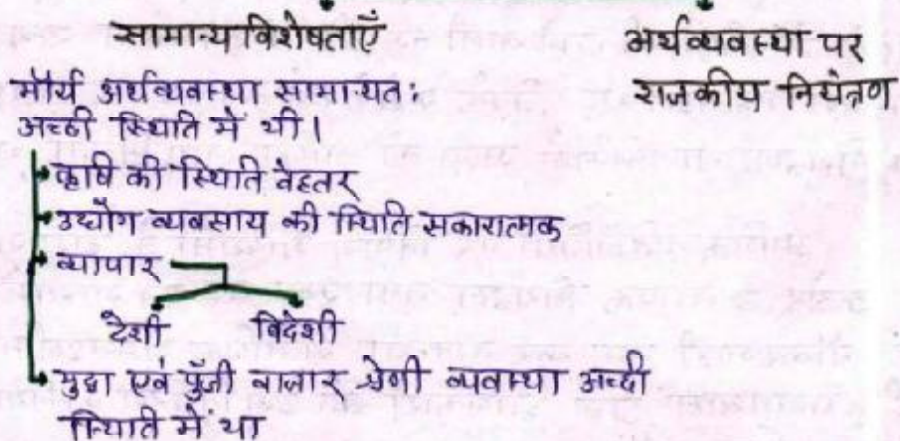
लोकनि सेना एवं अधिकारियों केवल राज्य यहाँ हर संभव नियंत्रण करने की कोशिश करता था।

सीमापावर्ती क्षेत्र :- इसके तट आरविक जनजातियों (नेगली (जबलपुर से राजमहल के बीच) का क्षेत्र आता था राज्य का नियंत्रण यहाँ सबसे कम था क्योंकि यहाँ की जनजातियाँ मगध के शासकों के आदेशों का पालन नहीं करती थी यही कारण है कि अशोक अपने अभिलेखों में आरविकों को कड़ी चेतावनी जारी करता है।

विभिन्न स्रोतों का विश्लेषण करने एवं विभिन्न मतों की जाँच करने के बाद निष्कर्षित कहा जा सकता है कि मौर्य राज्य एक ऐसा राजतन्त्रात्मक राज्य था जिसके स्वरूप में काफी विविधता थी लेकिन इसे एक सैनिक राज्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि राज्यों के नगरीय प्रशासन में सेना की भूमिका महत्वपूर्ण नहीं थी।

लेकिन मौर्य राज्य में सामाज्यवादी पैतृक एवं कल्याणकारी तत्व विद्वान थे इसमें के दीकरण के साथ साथ विकेदीकरण के तत्व भी थे राज्य का नियंत्रण सर्वत्र एक जैसा नहीं था हालांकि शाक्तियों एवं नियंत्रण केन्द्र के एक पक्ष में झुकी थी।

“मौर्य अर्थव्यवस्था”



मौर्य राज्य अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में नये प्रयोगों की प्रवृत्ति को परिलक्षित करता है एक विस्तृत केंद्रीकृत तथा साम्राज्यवादी राज्य के अनुकूल एक मजबूत अर्थव्यवस्था के निर्धारण का प्रयास किया गया कोटिलिय ने राज्य की प्रत्येक गतिविधियों को परिभाषित कर राज्य की उन्नति के आर्थिक आधार को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना।

राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन और व्यापार वाणिज्य पर आधारित थी इसको साम्मिलित रूप से वार्ता कहा गया है इनमें कृषि मुख्य पेशे के रूप में स्थापित था कोटिलिय ने कहा कि भूमि कृषि योग्य होनी चाहिए वह अदेवमातृक हो अर्थात् ऐसी भूमि हो कि उसमें बिना वर्षा के अच्छी पैती हो सके। राजकीय भूमि पर दासों एवं मजदूरों के द्वारा व्यापक रूप से कृषि कार्य हो सके। ^{कृषण जाता था।}

राज्य को कृषि से दो तरह की आय प्राप्त होती है पहला राज्य की नीजी भूमि पर उत्पादन से आय दूसरा भूमि कर के रूप में कृषि के विकास में राज्य के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई जिसमें नये कृषि फार्मों की स्थापना प्रमुख है।

व्यापार वाणिज्य :- निर्माण एवं व्यापार के क्षेत्र में राज्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी राज्य द्वारा बहुत से वस्तुओं का निर्माण व बिक्री की जाती थी जिसे राजपण्य की संज्ञा दी गई। विशेष आर्थिक क्षेत्र में एकाधिकार की प्रवृत्ति दिखती है। जैसे खनन, नमक, जहान अरुण शरून आदि में राज्य का एकाधिकार था इसके विक्रय पर भी राज्य का एकाधिकार था विदेशों में बिक्री की जाने वाली वस्तुओं में वन संपदा रत्न आभूषण महत्वपूर्ण था जिनके स्त्रीतो एवं उत्पादन पर राज्य का नियंत्रण था जिससे राज्य को अधिक लाभ मिलता था

आर्थिक गतिविधियों पर विभिन्न माध्यमों के द्वारा राज्य ने कठोर व व्यापक नियंत्रण बना रखा था इन माध्यमों में नौकरशाही तथा कर व्यवस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी गई। पण्यध्यक्ष जैसे अधिकारी को इस नियंत्रण का निष्ठात्मक माना जा सकता है।

जिसका कार्य बिक्री की वस्तु का सुक्ष्मता से नियंत्रण करना तथा वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करना था ताकि व्यापारी भी अनुचित लाभ न कमा सकें। विभिन्न प्रकार के दण्ड के प्रावधान थे, जैसे घटिया उत्पादन एवं मिलावट पर दण्ड दिया जाना।

राजकोषीय नीति तथा करारीपण व्यवस्था में मौर्य राज्य एक विशिष्ट प्रवृत्ति का द्योतक है। साम्राज्य के वृहद आवश्यकताओं के अनुरूप राजकोषीय नीति निर्धारित की गई। मौर्य राज्य को कर निर्धारण को एक आवश्यक तत्व माना गया है। राज्य के द्वारा प्रत्येक संभावित क्षेत्र से कर उगाही की जाती थी जैसे गाणिकाओं पर कर नट एवं करतब दिखाने वालों पर कर मनोरंजन कर आदि अधिशास्त्र करो की एक विस्तृत सूची देता है। समाहर्ता एवं खानिघाता के रूप में महत्वपूर्ण करारधिकारी का उल्लेख मिलता है। समाहर्ता जहा कर निर्धारण से संबंधित अधिकारी था वहीं खानिघाता कर संग्राहक अधिकारी था मौर्य राज्य ने सिर्फ करो के निर्धारण एवं संग्रहण में ही रुची नहीं दिखाई बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति हेतु व्यवस्था बनाने की भी कोशिश की।

कृषि / सिंचाई :- मौर्य काल में विभिन्न माध्यमों द्वारा कृषि कार्य को प्रोत्साहित किया गया था राज्य द्वारा कृषि कार्य हेतु कृषि औजार खाद ब बीज की भी व्यवस्था की जाती थी विभिन्न माध्यमों से सिंचाई व्यवस्था की स्थापना की गई सुदर्शन झील का निर्माण इसको पुष्ट करता है राज्य द्वारा सिंचाई के प्रवर्धन की प्रशंसा यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भी करता है।

यातायात एवं परिवहन :- मेगस्थनीज के अनुसार मौर्य राज्य में सड़क एवं यातायात को काफी महत्व दिया गया था उसके अनुसार राज्य को सड़क एवं यातायात की सुरक्षा करनी चाहिए मौर्य काल में विभिन्न सड़कों एवं भागों का निर्माण एवं पुनर्निर्माण किया गया उत्तरापथ एवं दक्षिणापथ का उल्लेख प्राप्त होता है कौटिल्य ने स्थलमार्गीय व्यापार की तुलना में नदी मार्गों से व्यापार को अधिक सुरक्षित माना है।

क्योंकि यह चोर डाकू की भय से अपेक्षाकृत मुक्त था यदि मार्ग में व्यापारियों का रुकसान हो जाए तो राज्य क्षतिपूर्ति देता था भंडाच, सोपारा ताम्रालिप्ति महत्वपूर्ण वदगाह्य व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने में सिक्को के प्रचलन का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

“मौर्यराज एवं आर्थिक नियंत्रण”

मौर्यराज्य मूलतः एक केंद्रीकृत राज्य था जिसमें एक भारी भरकम विशाल नौकरशाही द्वारा शासन एवं अर्थ प्रणाली पर नियंत्रण किया जाता था निजी स्तर पर लोग विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न थे लेकिन आर्थिक क्रियाकलापों पर राज्य का नियंत्रण था अनेक क्षेत्रों में ऐसे थे जहाँ उत्पादन पर केवल राज्य का एकाधिकार था आर्थिक क्रियाओं को मौर्यों ने नियमों द्वारा नियंत्रित करने का कार्य किया जैसे -

कृषि क्षेत्र - मौर्य राज्य में अधिकांश कृषि कार्य स्वतंत्र किसान करते थे लेकिन राज्य भी कृषि क्षेत्र में नियंत्रण रखता था राज्य की अपनी निजी भूमि है जिसे सतिहा कहा जाता है यहाँ सतिहाध्यक्ष नामक अधिकारी खेती कराते थे। इसकी समस्त आय राजकीय खजाने में जमा की जाती थी। अर्थशास्त्र में कोटिल्य कहता है कि शासक को बुद्धि दासों तथा भाड़े के मजदूरों से खाली परती भूमि को तोड़कर खेती कराना चाहिए इससे राज्य के आय के साथ-साथ कृषि का भी विकास होगा।

उत्पादन एवं व्यापार वाणिज्य पर राज्य का नियंत्रण - अनेक वस्तुओं के उत्पादन पर राज्य का एकाधिकार था जिसे राज्यपण्य की संज्ञा दी गयी है। इन वस्तुओं का उत्पादन आम लोग नहीं कर सकते थे जैसे धातु एवं खनिज उद्योग शराब वनस्पदा आदि। अर्थव्यवस्था के अनेक गतिविधियों पर उच्चाधिकारियों

(अध्यक्ष) का नियंत्रण था जैसे पोतवाध्यक्ष (मापतोलपट) अकराध्यक्ष खानों पर रूपाध्यक्ष सिक्को पर शुल्काध्यक्ष नुंगीपर नियंत्रण करते थे।

श्रेणी संगठनों पर राज्य का नियंत्रण :- सामान्यतः प्राचीन भारतीय राज्य श्रेणियों की काफी स्वायत्तता देते थे लेकिन मौर्यों ने श्रेणियों (निगमित) व्यापारिक संस्थानों (शिष्पी, महाजन सार्धवाह आदि) पर नियंत्रण स्थापित किया अर्थशास्त्र में चर्चा है कि राज्य माह में दो से तीन दिन निश्चुल्क कार्य करता था महाजनों द्वारा दिये जाने वाले शुद्ध की दरों को राज्य तय करता था जो काफी उच्च होती थी (60% - 120% - 240%)

मौद्रिक एवं राजकोषीय नियंत्रण :- मुद्रा जारी करने का अधिकार केवल राज्य के पास था इसी प्रकार राज्य अधिक से अधिक करो को वसूल करने का कार्य करता था अर्थशास्त्र में करो की काफी लड़ी सूची मिलती है। उत्पादन बिक्री खरीद व्यापार मनोरंजन आदि पर विभिन्न प्रकार के कर लगाए जाते थे।

अवसंस्चना के साधनों पर राज्य का नियंत्रण :- सड़को पुलों कदरगाहों स्थलमार्गों एवं जलमार्गों पर राज्य नियंत्रण करता था कौटिल्य कहता है कि स्थलमार्ग की अपेक्षा जल मार्ग अधिक सुरक्षित है राज्यों को इस पर नियंत्रण रखना चाहिए।

“मौर्य समाज”

मौर्य समाज एक मिश्रित समाज था इस काल की समाजिक विशेषताएँ पूर्व काल की निरंतरता में बनी रही हालांकि कुछ नयी विशेषताएँ भी दिखाई देती हैं मौर्य समाज की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं।

- मौर्य समाज एक बहुलतावादी समाज था जिसमें अनेक वर्गों जातियों कबिलों एवं धर्मों (ब्रह्मण वैश्य जैन आदिकावल) का आस्तित्व था।

- ब्रह्मणीय समाज चार वर्गों में एवं अनेक जातियों में बँटा था जिसमें वर्ण एवं जातिय आधारित भेदभाव था वैश्य जैन मूलानी एवं कबिलाई जनजातियाँ भी समाज का अंग थीं लेकिन इनके बीच जातिगत भेदभाव नहीं था

- सम्राज्य में दास प्रथा विद्यमान थी कौटिल्य के अर्थशास्त्र अशोक के अभिलेखों तथा बौद्ध एवं जैन साहित्य में मौर्य काल में दास व्यवस्था की प्रचलन की जानकारी प्राप्त होती है। हालांकि मेगास्थनीज लिखता है कि भारत में दास प्रथा नहीं है लेकिन इसका विवरण सही नहीं माना जाता है।
- सम्राज्य मूलतः पितृसत्तात्मक था स्त्रियों की स्थिति द्वितीयक एवं अधीनस्थ थी उन्हें अनेक अधिकारों से वंचित रखा गया था हालांकि कौटिल्य अर्थशास्त्र में स्त्रियों को तलाक का अधिकार देता है स्त्रियों को कुछ मामलों में प्रशासन के उच्च पदों पर नियुक्ति के साक्ष्य मिलते हैं मेगास्थनीज महिला अंगरक्षकों की चर्चा करता है जो चंद्रगुप्त मौर्य की सेवा में कार्यरत थी गुप्तचरों के पद पर उनकी नियुक्ति की जाती थी अशोक के अभिलेखों में इतिहासिक महामात्र नामक उच्च स्त्री अधिकारियों की चर्चा मिलती है।
- मौर्यकाल में सामाजिक नैतिकता पर काफी बल दिया जाता था विवाह एक प्रमुख सामाजिक आदर्श था अर्थशास्त्र कहता है कि लोगों को वंशधर्म के नियमों एवं सामाजिक मूल्यों का आचरण करना चाहिए अशोक अपने अभिलेखों में लोगों से माता पिता की सेवा करने दासों एवं नौकरों से अच्छा व्यवहार करने ब्राह्मणों एवं श्रवणों का सम्मान करने आदि की वकालत करता है मेगास्थनीज लिखता है कि लोग अच्छे आचरण का पालन करते हैं अपनी संपत्ति को खूला छोड़ देते हैं न्यायालयों में नहीं जाते हैं बल्कि आपसी रझामंदी द्वारा झगड़ों को सुलझा लेते हैं।

Dhyeya IAS Now on Telegram



Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्सक्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारे ईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें** अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से **Subscribe** करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |



ध्येय IAS®
most trusted since 2003



Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- **1st Step:** Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- **2nd Step:** Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- **3rd Step:** Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Subscribe



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
मुफ्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध है

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने
के लिए 9355174442 पर **"Hi Dhyeya IAS"**
लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं
www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए **9355174442** पर **"Hi Dhyeya IAS"** लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400